गरीबी का अर्थ अथवा अवधारणा;

Dr. S.K. Singh
Deptt of Economics

(MEANING OR CONCEPT OF POVERTY)

आज सरकार, राजनीतिज्ञ, समाज सुधारक, आदि सभी गरीबी के बारे में बात करते हैं, लेकिन सभी को गरीबी के सही अर्थ का बोध नहीं होता है। सामान्यतया गरीबी का आशय लोगों के निम्न जीवन स्तर से लगाया जाता है। जीवन स्तर सापेक्ष अथवा निरपेक्ष दृष्टि से देखा जा सकता है। अतः गरीबी की धारणा को दो रूपों में व्यक्त किया जा सकता है; (1) निरपेक्ष गरीबी (Absolute poverty) (2) सापेक्ष गरीबी (Relative poverty)।

(1) निरपेक्ष गरीबी (Absolute poverty)- एक व्यक्ति की निरपेक्ष गरीबी से अर्थ है कि उसकी आय या उपभोग व्यय इतना कम है कि वह न्यूनतम भरण-पोषण स्तर के नीचे स्तर पर रह रहा है। इसी बात को दूसरे शब्दों में इस प्रकार कह सकते हैं कि "गरीबी से अर्थ मानव की आधारभूत आवश्यकताओं- खाना कपड़ा, स्वास्थ्य सफाई आदि की पूर्ति हेतु पर्याप्त वस्तुओं व सेवाओं को जुटा पाने में असमर्थता से है।"

इस तरह यह कहा जा सकता है कि "गरीबी से अर्थ उस न्यूनतम आय से है जिसकी एक परिवार के लिए आधारभूत न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवश्यकता होती है तथा जिसे वह परिवार जुटा पाने में असमर्थ होता है।" इस गरीबी को निरपेक्ष गरीबी कहते हैं, जो परिवार उस न्यूनतम आय को जुटा पाने में असमर्थ होता है तब कहा जाता है कि वह परिवार गरीबी रेखा से नीचे का जीवन व्यतीत कर रहा है।

(2) सापेक्ष गरीबी (Relative poverty) सापेक्ष गरीबी आय की असमानताओं के आधार पर परिभाषित की जाती है। इस सम्बंध में विभिन्न वर्गों या देशों के निर्वाह-स्तर अथवा प्रति व्यक्ति आय की तुलना करके गरीबी का पता लगाया जाता है। जिस वर्ग या देश के लोगों का जीवन-स्तर या प्रति व्यक्ति आय का स्तर नीचा रहता है वे उच्च निर्वाह स्तर या प्रति व्यक्ति आय वाले लोगों की तुलना में गरीब माने जाते हैं। निर्वाह-स्तर को आय एवं उपभोग-व्यय के आधार पर मापा जाता है।

विशुद्ध एकाधिकार (PURE MONOPOLY)

Dr. S.K. Singh
Deptt of Economics

विशुद्ध प्रतियोगिता की विपरीत स्थिति को विशुद्ध एकाधिकार कहा जाता है। विशुद्ध एकाधिकार की दशा तब होती है, जब बाजार में प्रतियोगिता का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। विशुद्ध एकाधिकार की स्थिति को स्पष्ट करते हुए फर्गुसन ने लिखा है कि "विशुद्ध एकाधिकार तब होता है जब वस्तु को एक और केवल एक ही फर्म के द्वारा पैदा किया जाता हो या बेचा जाता हो।" दूसरे शब्दों में, हम कह सकते हैं कि "विशुद्ध एकाधिकार एक फर्म वाला उद्योग है, जहाँ एकाधिकार फर्म की वस्तु तथा अर्थव्यवस्था में किसी अन्य वस्तु के बीच आड़ी माँग की लोच (Cross elasticity of Demand) शून्य होती है।

विशुद्ध एकाधिकार की दशाएँ (Conditions for pure Monopoly)

विशुद्ध एकाधिकार में निम्न बातें प्रमुख रूप से पायी जाती हैं:

1) वस्तु का केवल एक ही विक्रेता होता है अथवा वस्तु एक ही फर्म द्वारा तैयार की जाती है। उस वस्तु के उत्पादन में दो फर्मों का कोई योगदान नहीं होता है अर्थात् एकाकी फर्म विशुद्ध एकाधिकार का उदाहरण हो सकती है।

2) एकाधिकारी फर्म के द्वारा उत्पादित वस्तु की आड़ी माँग की लोच (Cross Elasticity of Demand) शून्य होती है। अर्थात् एकाधिकारी के द्वारा उत्पादित वस्तु की अन्य कोई भी वस्तु निकट स्थानापन्न नहीं होती है।

3) एकाधिकारी उद्योग के असामान्य लाभ को देखते हुए भी बाहर से कोई नयी फर्म उद्योग में प्रवेश नहीं करती है। अर्थात् एकाधिकारी की स्थिति पूर्णतया सुरक्षित रहती है।

उपर्युक्त बातों के अतिरिक्त एकाधिकार के सम्बंध में निम्न बातें उल्लेखनीय हैं:

i) एकाधिकारी का अपनी वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियन्त्रण होता है।
ii) एकाधिकारी का माँग वक्र ऋणात्मक ढाल का होता है।
iii) एकाधिकारी को प्रतियोगिता का भय न होने तथा उसके द्वारा उत्पादित वस्तुओं की स्थानापन्न वस्तुओं के न होने के कारण विज्ञापन व्यय नहीं के
iv) एकाधिकारी को भविष्य की सम्भावित प्रतियोगिता का भय अवश्य रहता है